The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 5 | May 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

भारत में महिला सशक्तिकरण का यथार्थ

मीनू सिंह सोलंकी

शोधार्थी समाजशास्त्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 30-05-2025

Published: 10-06-2025

Keywords:

शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और राजनैतिक प्रतिनिधित्व

ABSTRACT

यह शोध भारत में महिला सशक्तिकरण की वर्तमान स्थिति का एक गहन विलेषण प्रस्तुत करता है। शोध में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक संदर्भो में महिलाओं की स्थिति का मूल्यांकन किया गया है। शोध में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और राजनैतिक प्रतिनिधित्व जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में महिलाओं की प्रगति का विश्लेषण किया गया है। शोध में पाया गया है कि भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए कई प्रयास किए गये हैं, लेकिन अभी भी कई चुनौतियॉ मौजूद है। सामाजिक सांस्कृतिक रूढ़िवादिता, लौगिक असमानता और हिंसा जैसी समस्यसएं महिलाओं के सशसक्तिकरण में बाधक बन रही है। हालांकि कई महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में सफलता प्राप्त की है। और कई सकारात्मक बदलाव भी देखने को मिले है। शोध के निष्कर्षो के आधार पर मलिा सशक्तिकरण के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझााव दिए गए हैं इनमें नीतिगत परिवर्तन सामाजिक जागरूकता अभियान शिक्षा और कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित करना और महिलाओं के नेतृत्व को बढ़ावा देना शामिल है।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15660546

महिला सशक्तिकरणःएक परिभाशा और महत्व :–

महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य महिलाओं को उनके अधिकारों और स्वतंत्रता के प्रति जागरूक करना और उन्हें समाज में समान अवसर प्रदान करना है। यह एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से महिलाएं अपने जीवन को बेहतर बनाता है बल्कि समाज के विकास में भी योगदान देता है।

भारत में महिलाओं की ऐतिहासिक और सामाजिक स्थिति :–

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति सदैव से जटिल रही है। ऐतिहासिक रूप से महिलाओं को पुरूषों की तुलना में कमतर माना जाता था और उन्हें घरेलू कार्यो तक सीमित रखा जाता था। धार्मिक ग्रंथों और सामाजिक रीति–रिवाजों ने भी महिलाओं की भूमिका को परिभाषित किया है। स्वतंत्रता के बाद भारत में महिलाओं की स्थिति में कुछ सुधार हुए है। शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। हालांकि, अभी भी कई चुनौतियॉ मौजूद हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति शहरी क्षेत्रों क तुलना में अधिक चुनौतिपूर्ण है। सामाजिक–सांस्कृतिक रूढ़िवादिता, लैंगिक असमानता और हिंसा जैसी समस्याएं महिलाओं के सशक्तिकरण में बाधक बन रही है।

महिला सशक्तिकरण पर साहित्य समीक्षा :–

महिला सशक्तिकरण पर व्यापक शोध हुए है। ये शोध मुख्यतः सामाजिक – सांस्कृतिक कारकों (रूढ़िवादिता, धार्मिक मान्यताएं) आर्थिक सशक्तिकरण (रोजगार, उद्यमिता) राजनीतिक सशक्तिकरण (राजनीति भागीदारी), शिक्षा और स्वास्थ्य तथा हिंसा के खिलाफ लड़ाई जैसे क्षेत्रों पर केन्द्रित रहे है। भारत में महिला सशक्तिकरण पर कई दृष्टिकोण देखने को मिलते है, जैसे विकासवादी दुष्टिकोण जो इसे आर्थिक विकास से जोड़ता है, सशक्तिकरण दृष्टिकोण जो सक्रिय हस्तक्षेप की वकालतकरता है और लैगिंक दृष्टिकोण जो लैगिंक असमानता को मुख्य मुद्रा मानता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाएं महिला सशक्तिकरण के लिए कई पहल करती रही है। लेकिन कई हिस्सों में महिलाएं अभी भी असमानता का सामना करती है।

1. भारत में महिला सशक्तिकरण पर विभिन्न दृष्टिकोण :–

भारत में महिला सशक्तिकरण पर विभिन्न दृष्टिकोण देखने को मिलते है।

- **विकासवादी दृष्टिकोण** :– यह दृष्टिकोण मानता है कि महिला सशक्तिकरण एक धीमी और क्रमिक प्रक्रिया है जो आर्थिक विकास के साथ जुड़ी हुई है।
- **सशक्तिकरण दृष्टिकोण** :– यह दृष्टिकोण महिलाओं को महिला सशक्ति बनाने के लिए सक्रिय हस्तक्षेप की आवश्यकता पर जोर देता है।
- **लैगिंक दृष्टिकोण** :– यह दृष्टिकोण लैंगिंक असमानता को महिला महिला सशक्तिकरण का मुख्य कारण मानता है। और लैगिंक समानता पर जोर देता है।

अंतराष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं सशक्तिकरण के प्रयास :–

अंतराष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं सशक्तिकरण के प्रयास किए गये है। संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनो ने महिलाओं ने महिलाओं के अधिकारों के लिए कई अभियान चलाए है। कई देशों ने महिला सशक्तिकरण के लिए नीतियां बनाई है और कार्यक्रम चलाए है। इन प्रयासों के बाबजूद दुनिया के कई हिस्सों में महिलाएं अभी भी असमानता और उत्पीड़न का सामना करती है।

भारत में महिला सशक्तिकरण की वर्तमान स्थिति :–

भारत में महिला सशक्तिकरण एक जटिल और बहुआयामी विषय है हालांकि पिछले कुछ दशकों में महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। फिर भी कई चुनौतीयॉ बनी हुई है। आइए हम विभिन्न संदर्भों में महिलाओं की स्थिति का विस्तार से विरूलेषण करें।

सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संदर्भ में विश्लेषण :–

- **सामाजिक संदर्भ** :– भारत में महिलाओं की स्थिति सदियों से सामाजिक रूढ़ियों और धार्मिक मान्सताओं से प्रभावित रही है। हालाकि शिक्षा और जागरूकता के प्रसार के साथ्ज्ञ सामाजिक दृष्टिकोण में धीरे–धीरे बदलाव आ रहा है।
- **आर्थिक संदर्भ** :– महिलाएं अब अधिक संख्या में रोजगार औरउद्यमिता में भाग ले रही है। सरकार द्वारा कई योजनाएं चलाई जा रही है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिए आर्थिक अवसर अभी भी सीमित है।

- **राजनीतिक संदर्भ :–** महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ रही है, लेकिन अभी भी पुरूषों की तुलना में कम है आरक्षण जैसी नीतियों के माध्यम से महिलाओं को राजनीति में अधिक प्रतिनिधित्व देने के प्रयास किए गये है।

- **सांस्कृतिक संदर्भ :–** भारतीय संस्कृति में महिलाओं को पारंपरिक रूप से घर और परिवार की देखभाल करने वाली के रूप में देखा जाता है। यह धारणा बदल रही है, लेकिन अभी भी कई क्षेत्रों में महिलाओं की स्वतंत्रता को सीमित करती है।

षिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और राजनीतिक प्रतिनिधित्व में महिलाओं की स्थिति :–

- **षिक्षा :–** महिला साक्षरता दर में वृद्धि हुई है , लेकिन ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में अभी भी बहुत कम है। उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी भी बढ़ रही है।

- **स्वास्थ्य :–** महिलाओं के स्वास्थ्य पर ध्यान केद्रिंत किया जा रहा है, लेकिन कुपोषण, एनीमिया और प्रसव संबंधी जटिलताएं अभी भी प्रमुख समस्याए है।

- **रोजगार :–** महिलाएं अब बिभिन्न क्षेत्रों में काम कर रही है।, लेकिन असंगठित क्षेत्र में काम करने वाली महिलाओं की संख्या अधिक है। वे अभी भी कम वेतन और असुरक्षित कामकाजी परिस्थितियों का सामना करती है।

- **राजनीतिक प्रतिनिधित्व :–** महिलाओं को राजनीति में आरक्षण दिया गया है। लेकिन अभी भी पर्याप्त संख्या में महिलाएं निर्णय लेने वाली स्थिति में नही है।

ग्रामीण और शहरी महिलाओं के बीच अंतर :–

ग्रामीण और शहरी महिलाओं की तुलना में अधिक चुनौतियों का सामना करती है। उनके पास सीमित शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं और रोजगार के अवसर होते है। वे घरेलू कार्यो और कृषि में अधिक समय व्यतीत करती है।

विभिन्न जाति, धर्म और वर्ग की महिलाओं की स्थिति :–

जाति, धर्म और वर्ग के आधार पर महिलाओं की स्थिति में काफी अंतर होता है। उच्च जाति और उच्च वर्ग की महिलाओं के पास अधिक अवसर होते है, जबकि दलित आदिवासी और निम्न वर्ब की महिलाएं अधिक वंचित होती है।

भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए कई प्रयास किय जा रहे है, लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। महिलाओं को शिक्षित करना, उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाना, उनके खिलाफ होने वाली हिंसा को रोकना और उन्हें राजनीतिक प्रक्रिया में शामिल करना आवश्यक है।

2. भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए किए गए प्रयास :–

भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए सरकार, गैर–सरकारी संगठन, महिला स्वंयसंवी संगठन और मीडिया सभी मिलकर काम कर रहे है। इन प्रयासों के माध्यम से महिलाओं को शिक्षित किया जा रहा है।, उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा रहा है। और उन्हें समाज में समान में समान अवसर प्रदान किये जा रहे है।

सरकारी नीतियां और कार्यक्रम :–

भारत सरकार ने महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कई नीतियां और कार्यक्रम बनाए हैं इनमें से कुछ प्रमुख नीतियां और कार्यक्रम निम्नलिखित है।

- **बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं** :– इस अभियान का उद्देश्य लिंगानुपात में सुधार लाना और लडकियों की शिक्षा को बढ़ावा देना है।
- **सखी योजना** :– इस योजना के तहत महिलाओं को सुरक्षा और सहायता प्रदान की जाती है।
- **महिला एवं बाल विकास मंत्रालय** :– यह मंत्रालय महिलाओं और बच्चों के कल्याण के लिए कई कार्यक्रम चलाता है।
- **पंचायती राज** :– पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण का प्रावधान किया गया है।
- **महिला उद्यमिता योजनाएं** :– महिलाओं को उद्यमिता के लिए प्रोत्साहित करने के लिए कई योजनाए चलाई जा रही है।

गैर सरकारी संगठनों की भूमिका :–

गैर–सरकारी संगठन (छळव) महिला सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। वे ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास के अवसर प्रदान करते है। वे महिलाओं को उनके अधिकारों के बारे में जागरूक करते है और उन्हें संगठित होने में मद्द करते है।

महिलाओं के स्वयंसेवी संगठन :–

महिलाओं के स्वयंसेवी संगठन महिलाओं के मुद्दों को करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मीडिया के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने लौगिंक समानता को बढ़ावा देने और महिलाओं के खिलाफ हिंसा को रोकने के लिए काम करते है।

3. भारत में महिला सशक्तिकरण की चुनौतियॉ और बाधाएँ :–

भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए किए जा रहे प्रयासों के बावजूद, कई चुनौतियों और बाधाएँ मौजूद हैं जो महिलाओं की प्रगति को रोकती है। इनमें से कुछ प्रमुख चुनौतियॉ निम्नलिखित है।

समाजिक–सांस्कृतिक रूढ़िवादिता :–

- **लैंगिक भूमिकाएँ :–** भारतीय समाज में पारंपरिक रूप से महिलाओं को घर और परिवार की देखभाल करने वाली के रूप में देखा जाता है। यह धारणा महिलाओं की स्वतंत्रता और विकास को सीमित करती है।
- **दहेज प्रथा :–** दहेज प्रथा एक गहरी जड़ी हुई सामाजिक समस्या है जो महिलाओं के जीवन को प्रभावित करती है।
- **बाल विवाह :–** बाल विवाह महिलाओं की शिक्षा और स्वास्थ्य को नुकसान पहुचाता है और उनके आर्थिक विकास को रोकता है।

लैगिंक असमानता :–

- **शिक्षा में असमानता :–** ग्रामीण क्षेत्रों में और निम्न वर्गो में लड़कियों की शिक्षा की दर लड़कों की तुलना में कम है।
- **रोजगार में असमानता :–** महिलाओं को पुरूषों की तुलना में कम वेतन वाले और असुरक्षित नौकरियां मिलती है।

- **स्वास्थ्य सेवाओं में असमानता** :– महिलाओं को पुरूषों की तुलना में स्वास्थ्य संवाओं तक कम पहुच होती है।

आर्थिक असमानता

- **आर्थिक निर्भरता** :– अधिकांश महिलाएं आर्थिक रूप से अपने पति या परिवार पर निर्भर होती है। जिससे उनकी स्वतंत्रता सीमित हो जाती है।
- **संपत्ति के अधिकार** :– महिलाओं को संपत्ति के अधिकारों तक सीमित पहुंच होती है।

हिंसा और उत्पीड़न :–

- **घरेलू हिंसा** :– घरेलू हिंसा महिलाओं के लिए एक बड़ी समस्या है।
- **यौन उत्पीड़न** :– कार्य स्थल और सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं के साथ यौन उत्पीड़न की घटनाएं आम है।
- **दहेज हत्या** :– दहेज के लिए महिलाओं की हत्या एक गम्भीर अपराध है।

राजनीतिक प्रतिनिधित्व में कमी :–

- **निर्णय लेने में कम भूमिका** :– महिलाओं को राजनीतिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में कम शामिल किया जाता है।
- **राजनैतिक पदो पर कम प्रतिनिधित्व** :– महिलाओं का राजनैतिक पदों पर प्रतिनिधित्व अभी भी कम है।

4. **महिला सशक्तिकरण** : सफलता की कहानियां और उत्साहजनक पहल :–

भारत में महिला सशक्तिकरण की दिशा में कई सकारात्मक बदलाव हो रहे है। कई महिलाओं ने अपनी मेहनत और लगन से न केवल अपनी पहचान बनाई है बल्कि समाज के लिए भी प्रेरणा का स्त्रोत बनी है।

महिला उद्यमियों की सफलता :– भारत में कई महिलाएं उद्यमिता के क्षेत्र में सफलता पाप्त कर रही है। इंदिरा नयी पूप्सीको की पूर्व सीईओं, और फाल्बुनी नायार नायका की संस्थापक, एंसी ही कुछ

उल्लेखनीय उदाहरण है। इन महिलाओं ने न केवल आर्थिक रूप से सफलता प्राप्त की है बल्कि अन्होने लाखों महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत भी बनी है।

महिला नेतृत्व में सफलता की कहानियॉ :– राजनीति व्यापार और अन्य क्षेत्रों में कई महिलाएं नेतृत्व के पदों पर पहुंचकर सफलता प्राप्त कर रही है। किरण वेदी , भारत की पहली महिला आईपीएस अधिकारी और सुषमा स्वराज, भारत की पहली महिला विदेश मंत्री ऐसी ही कुछ उल्लेखनीय उदाहरण है। से महिलाएं न केवल अपने क्षेत्र में सफल रही है बल्कि उन्होने महिलाओं के लिए रोल मॉडल का काम भी किया है।

सशक्त महिलाओं के उदाहरण :– भारत में कई महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों में कई महिलाएं स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से आर्थिक रूप से सशक्त हो रही है। शिक्षिकाएं ग्रमीण क्षेत्रों में लड़कियों की शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं कई महिलाएं सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में काम कर रही है और समाज के वंचित वर्गो की सेवा कर रही है।

सफल सरकारी और गैर–सरकारी कार्यक्रम :–

भारत सरकार ने महिला सशक्तिकरण के लिए कई कार्यक्रम शुरू किए है। बेंटी बचाओं बेटी पढ़ाओं अभियान सखी योजना और महिला एवं बाल बिकास मंत्रालय द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रम महिला सशक्तिकरण के लिए महत्वपूर्ण कदम ळें इसके आलावा कई गैर–सरकारी संगठन भी महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम चला रहे है, जैसे कि कौशल विकास प्रशिक्षण, स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम आदि।

ये सभी उदाहरण दर्शाते है। कि भारत में महिला सशक्तिकरण की दिशा में बहुत कुछ हो रहा है। हालांकि अभी भी कई चुनौतियॉ बनी हुई है। लेकिन इन सफलता की कहानियों से हमें उम्मीद मिलती है कि आने वाले समय में महिलाएं और अधिक सशक्त होगी और समाज में समानता आएगी।

निष्कर्ष :–

भारत में महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। महिलाएं शिक्षा रोजगार और राजनीति में सक्रिय भूमिका निभा रही है। सरकार और गैर–सरकारी संगठनों द्वारा चलाई गई विभिन्न योजनाओं ने महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया है। हालांकि सामाजिक–सांस्कृतिक रूढ़िवादिता, लौगिक असमानता और आर्थिक चुनौतियॉ अभी भी महिलाओं की प्रगति में बाधक है। महिलाओं के खिलाफ हिंसा एक गंभीर समस्या है जिसका समाधान आवश्यक है। महिलाओं के सशक्तिकरण के

लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है, ताकि वे समाज के सभी क्षेत्रों में समाधान आवश्यक है। महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है।, ताकि वे समाज के सभी क्षेत्रों में समान अवसर प्राप्त कर सकें और देश के विकास में पूर्ण भागीदारी कर सकें।

सन्दर्भ–सूची

[1] Desai, S., & Banerji, M. (2008). Negotiated identities: Male migration and left-behind wives in India. Journal of Population Research, 25(3), 337-355. https://doi.org/10.1007/BF03033894

[2] Bhattacharya, R. (2014). Behind closed doors: Domestic violence in India. SAGE Publications India.

[3] Chakraborty, T. (2019). Empowering women: The effect of female literacy on female labor force participation in India. World Development, 118, 285-297. https://doi.org/10.1016/j.worlddev.2019.02.010

[4] Jejeebhoy, S. J., &Sathar, Z. A. (2001). Women's autonomy in India and Pakistan: The influence of religion and region. Population and Development Review, 27(4), 687-712. https://doi.org/10.1111/j.1728- 4457.2001.00687.x

[5] Kabeer, N. (2001). Resources, agency, achievements: Reflections on the measurement of women's empowerment. Development and Change, 30(3), 435-464. https://doi.org/10.1111/1467-7660.00125

[6] Kishor, S., & Gupta, K. (2004). Women's empowerment in India and its states: Evidence from the NFHS. Economic and Political Weekly, 39(7), 694-712. Retrieved from https://www.epw.in/journal/2004/07/special-articles/womens-empowerment-india-and-its-statesevidence-nfhs.html

[7] Nussbaum, M. C. (2000). Women and human development: The capabilities approach. Cambridge University Press. https://doi.org/10.1017/CBO9780511841287

[8] Panda, P., & Agarwal, B. (2005). Marital violence, human development and women's property status in India. World Development, 33(5), 823-850. https://doi.org/10.1016/j.worlddev.2005.01.009

[9] Sen, A. (1999). Development as freedom. Oxford University Press.

[10] Srivastava, R. (2015). Women's empowerment and gender equality in India: A case study of Gujarat. Asian Journal of Women's Studies, 21(4), 392-409. https://doi.org/10.1080/12259276.2015.1109724

[11] Sharma, K. (2017). Exploring the reality of women's empowerment in rural India. Journal of Rural Studies, 52, 218-227. https://doi.org/10.1016/j.jrurstud.2017.01.001